

रविवार 6 अप्रैल, 2025

विषय — कल्पना

स्वर्ण पाठ: यहोशू 24: 15

"तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे।"

उत्तरदायी अध्ययन: इफिसियों 1: 3, 10, 17-19

- ³ हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।
- ¹⁰ कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।
- ¹⁷ कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश का आत्मा दे।
- ¹⁸ और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है।
- ¹⁹ और उस की सामर्थ्य हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. निर्गमन 20: 3-6

- ³ तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥
- ⁴ तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, वा पृथ्वी पर, वा पृथ्वी के जल में है।

- 5 तू उन को दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा जलन रखने वाला ईश्वर हूँ, और जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों, और परपोतों को भी पितरों का दण्ड दिया करता हूँ,
- 6 और जो मुझ से प्रेम रखते और मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, उन हजारों पर करुणा किया करता हूँ॥

2. 1 राजा 12: 1, 28 (से 2nd), 29, 30, 32 (इसलिए) (से:)

- 1 रहूबियाम तो शकेम को गया, क्योंकि सब इस्राएली उसको राजा बनाने के लिये वहीं गए थे।
- 28 तो राजा ने सम्मति ले कर सोने के दो बछड़े बनाए।
- 29 तो उसने एक बछड़े को बेतेल, और दूसरे को दान में स्थापित किया।
- 30 और यह बात पाप का कारण हुई; क्योंकि लोग उस एक के साम्हने दण्डवत करने को दान तक जाने लगे।
- 32 इस रीति उसने बेतेल में अपने बनाए हुए बछड़ों के लिये वेदी पर, बलि किया।

3. 1 राजा 13: 1, 3-6

- 1 तब यहोवा से वचन पाकर परमेश्वर का एक जन यहूदा से बेतेल को आया, और यारोबाम धूप जलाने के लिये वेदी के पास खड़ा था।
- 3 और उसने, उसी दिन यह कहकर उस बात का एक चिन्ह भी बताया, कि यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिन्ह यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी।
- 4 तब ऐसा हुआ कि परमेश्वर के जन का यह वचन सुनकर जो उसने बेतेल के विरुद्ध पुकार कर कहा, यारोबाम ने वेदी के पास से हाथ बढ़ाकर कहा, उसको पकड़ लो: तब उसका हाथ जो उसकी ओर बढ़ाया गया था, सूख गया और वह उसे अपनी ओर खींच न सका।
- 5 और वेदी फट गई, और उस पर की राख गिर गई; सो वह चिन्ह पूरा हुआ, जो परमेश्वर के जन ने यहोवा से वचन पाकर कहा था।
- 6 तब राजा ने परमेश्वर के जन से कहा, अपने परमेश्वर यहोवा को मना और मेरे लिये प्रार्थना कर, कि मेरा हाथ ज्यों का त्यो हो जाए: तब परमेश्वर के जन ने यहोवा को मनाया और राजा का हाथ फिर ज्यों का त्यों हो गया।

4. विलाप 3: 22-24, 26

- 22 हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है।
- 23 प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।
- 24 मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उस में आशा रखूंगा।

26 यहोवा से उद्धार पाने की आशा रख कर चुपचाप रहना भला है।

5. यूहन्ना 4: 1-4, 6 (से), 7 (से), 19-21, 23, 23, 24, 27 (से), 31, 32, 34

- 1 फिर जब प्रभु को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता, और उन्हें बपतिस्मा देता है।
- 2 (यद्यपि यीशु आप नहीं वरन उसके चेले बपतिस्मा देते थे)।
- 3 तब यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया।
- 4 और उस को सामरिया से होकर जाना अवश्य था।
- 6 और याकूब का कूआं भी वहीं था; सो यीशु मार्ग का थका हुआ उस कूएं पर यों ही बैठ गया।
- 7 इतने में एक सामरी स्त्री जल भरने को आई।
- 19 स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि तू भविष्यद्वक्ता है।
- 20 हमारे बाप दादों ने इसी पहाड़ पर भजन किया: और तुम कहते हो कि वह जगह जहां भजन करना चाहिए यरूशलेम में है।
- 21 यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।
- 23 परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढता है।
- 24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।
- 27 इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे, कि वह स्त्री से बातें कर रहा है।
- 31 इतने में उसके चेले यीशु से यह बिनती करने लगे, कि हे रब्बी, कुछ खा ले।
- 32 परन्तु उस ने उन से कहा, मेरे पास खाने के लिये ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।
- 34 यीशु ने उन से कहा, मेरा भोजन यह है, कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करूं।

6. इब्रानियों 13: 5, 9 (से)

- 5 तुम्हारा स्वभाव लोभरिहत हो, और जो तुम्हारे पास है, उसी पर संतोष किया करो; क्योंकि उस ने आप ही कहा है, कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।
- 9 नाना प्रकार के और ऊपक्री उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखने वालों को कुछ लाभ न हुआ।

7. 1 पतरस 2: 11-16

- 11 हे प्रियों मैं तुम से बिनती करता हूं, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जान कर उस सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो।
- 12 अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जान कर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देख कर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें॥
- 13 प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है।
- 14 और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकिर्मियों को दण्ड देने और सुकिर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं।
- 15 क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो।
- 16 और अपने आप को स्वतंत्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिये आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आप को परमेश्वर के दास समझ कर चलो।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 241: 19-30

सभी भक्ति का तत्व ईश्वरीय प्रेम का प्रतिबिंब और प्रदर्शन है, बीमारी को ठीक करना और पाप को नष्ट करना है। हमारे मास्टर ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

एक उद्देश्य, विश्वास से परे एक बिंदु, सत्य के नक्शेकदम पर चलना चाहिए, स्वास्थ्य और पवित्रता का रास्ता। हमें होरेब की ऊँचाई तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए जहाँ परमेश्वर प्रगट होता है; और सभी आध्यात्मिक भवन की आधारशिला पवित्रता है। आत्मा का बपतिस्मा, मांस की सभी अशुद्धियों के शरीर को धोना, यह दर्शाता है कि शुद्ध हृदय ईश्वर को देखता है और आध्यात्मिक जीवन और उसके प्रदर्शन के करीब पहुंच रहा है।

2. 466: 21 (प्राण)-31

प्राण या आत्मा का अर्थ केवल एक मन है, और इसका बहुवचन में प्रतिपादन नहीं किया जा सकता है। हीथ पौराणिक कथाओं और यहूदी धर्मशास्त्रों ने इस धारणा को समाप्त कर दिया है कि बुद्धि, प्राण और जीवन सामग्री में हो सकते हैं; और मूर्तिपूजा और कर्मकांड सभी मानव निर्मित विश्वासों का परिणाम है। क्रिस्चियनिटी का विज्ञान हाथ से पंखे के साथ गेहूं को अलग करने के लिए आता है। विज्ञान ईश्वर को अष्ट घोषित करेगा, और ईसाई धर्म इस घोषणा और उसके ईश्वरीय सिद्धांत को प्रदर्शित करेगा, जिससे मानव जाति शारीरिक, नैतिक और आध्यात्मिक रूप से बेहतर होगी।

3. 535: 10-18

दैवीय विज्ञान जीवन और बुद्धि की कथित भौतिक नींव पर अपना मुख्य प्रहार करता है। यह मूर्तिपूजा को नष्ट करता है। ईसाई विज्ञान से पहले अन्य देवताओं, अन्य रचनाकारों और अन्य रचनाओं में विश्वास होना चाहिए। यह पाप के परिणामों को उजागर करता है जैसा कि बीमारी और मृत्यु में दिखाया गया है। मनुष्य कब ईसाई विज्ञान के खुले द्वार से होकर आत्मा के स्वर्ग में, मनुष्यों में ज्येष्ठ पुत्र की विरासत में प्रवेश करेगा? सत्य वास्तव में "मार्ग" है।

4. 186: 28-5

नश्वर मन स्वयं से अनभिज्ञ है, या यह कभी भी स्वयं को धोखा नहीं दे सकता है। यदि नश्वर मन बेहतर होना जानता था, तो यह बेहतर हो जाता। चूँकि इसे अपने अलावा किसी चीज़ पर विश्वास करना चाहिए, यह देवता के रूप में महत्वपूर्ण है। मानव मन शुरू से ही मूर्तिमान रहा है, अन्य देवताओं और एक से अधिक मन में विश्वास रखता है।

जैसा कि नश्वर भी नश्वर अस्तित्व को समझ नहीं पाते हैं, वे सभी अज्ञानी मन और उनकी रचनाओं से कितने अनभिज्ञ होंगे।

5. 480: 26-5

बाइबिल घोषित करता है: "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ [दिव्य शब्द]; और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" यह ईश्वरीय विज्ञान की शाश्वत सत्यता है। यदि पाप, बीमारी, और मृत्यु को कुछ भी नहीं समझा जाता, तो वे गायब हो जाते। जैसे सूरज से पहले वाष्प पिघलती है, वैसे ही अच्छाई की वास्तविकता से पहले बुराई गायब हो जाएगी। एक को दूसरे को छिपाना चाहिए। कितना महत्वपूर्ण है, फिर, वास्तविकता के रूप में अच्छा चुनना! मनुष्य ईश्वर, आत्मा, और कुछ नहीं के लिए सहायक है। ईश्वर का होना अनंत, स्वतंत्रता, सद्भाव और असीम आनंद है। "और जहां कहीं प्रभु का आत्मा है वहां स्वतंत्रता है।"

6. 351: 27-4

इस्त्राएलियों ने आध्यात्मिक उपासना करने के अपने प्रयास में अपना ध्यान भौतिक चीज़ों पर केन्द्रित किया। उनके लिए पदार्थ भौतिक था और आत्मा छायी थी। उन्होंने भौतिक दृष्टिकोण से आत्मा की पूजा करने का विचार किया, लेकिन यह असंभव था। वे यहोवा से निवेदन कर सकते थे, परन्तु उनकी प्रार्थना से कोई प्रमाण

नहीं मिलता था कि उसकी प्रार्थना सुनी गई, क्योंकि वे परमेश्वर को पर्याप्त रूप से नहीं समझते थे कि वे चंगा करने की अपनी शक्ति को प्रदर्शित कर सकें, - सामंजस्य को वास्तविकता और मतभेद को अवास्तविक बना सकें।

7. 404: 3-15

यदि कोई व्यक्ति एक पापी है, तंबाकू का गुलाम है, या पाप के असंख्य रूपों में से किसी एक का विशेष सेवक है, तो इन गलतियों को पूरा करें, और सत्य होने के साथ इन त्रुटियों को नष्ट करें, - गलत काम करने वाले को पीड़ित करके और उसे विश्वास दिलाते हैं कि झूठी भूख में कोई वास्तविक आनंद नहीं है। एक भ्रष्ट दिमाग एक भ्रष्ट शरीर में प्रकट होता है। वासना, द्वेष, और सभी प्रकार की बुराई रोगग्रस्त विश्वास हैं, और आप उन्हें केवल उन दुष्ट उद्देश्यों को नष्ट करके नष्ट कर सकते हैं जो उन्हें उत्पन्न करते हैं। यदि पश्चाताप नश्वर मन में बुराई खत्म हो गई है, जबकि इसका प्रभाव अभी भी व्यक्ति पर बना हुआ है, तो आप इस विकार को दूर कर सकते हैं क्योंकि भगवान का कानून पूरा हो गया है और अपराध को रद्द कर देता है।

8. 346: 29-2 (से?)

भौतिक विश्वासों को आध्यात्मिक समझ के लिए जगह बनाने के लिए निष्कासित किया जाना चाहिए। हम एक ही समय में परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते; लेकिन क्या कमजोर नश्वर यही करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं? पॉल कहते हैं: "शरीर आत्मा के विरोध में, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है।" इसे स्वीकार करने के लिए कौन तैयार है?

9. 167: 11-19

हम दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते हैं और न ही दिव्य विज्ञान को भौतिक इंद्रियों के साथ देख सकते हैं। ड्रग्स और स्वच्छता सफलतापूर्वक सभी स्वास्थ्य और पूर्णता के दिव्य स्रोत की जगह और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकते। यदि ईश्वर ने मनुष्य को अच्छा और बुरा दोनों बनाया है, तो मनुष्य को ऐसा ही रहना होगा। परमेश्वर के कार्य में क्या सुधार हो सकता है? पुनः, आधार में त्रुटि निष्कर्ष में अवश्य दिखाई देगी। एक ईश्वर के पास और आत्मा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए, आपको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।

10. 140: 16-22

हम आध्यात्मिक रूप से पूजा करते हैं, केवल इसलिए कि हम भौतिक रूप से पूजा करते हैं। आध्यात्मिक भक्ति ईसाई धर्म की आत्मा है। पदार्थ के माध्यम से पूजा करना बुतपरस्ती है। यहूदी और अन्य अनुष्ठान सच्ची पूजा के प्रकार और छाया हैं। "सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे।"

11. 340: 15-29

"तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना॥" (निर्गमन 20: 3). पहला आदेश मेरा पसंदीदा पाठ है। यह क्रायश्चियन साइंस प्रदर्शित करता है। यह ईश्वर, आत्मा, मन की विजय को प्रमाणित करता है; यह दर्शाता है कि मनुष्य के पास ईश्वर, शाश्वत भलाई के अलावा कोई अन्य आत्मा या मन नहीं होगा, और सभी लोगों के पास एक मन होगा। प्रथम आज्ञा का दिव्य सिद्धांत, विज्ञान के आधार को बताता है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वास्थ्य, पवित्रता और जीवन को शाश्वत प्रदर्शित करता है। एक अनंत भगवान, अच्छा, पुरुषों और देशों को एकजुट करता है; मनुष्य के भाईचारे का गठन करता है; युद्ध समाप्त करता है; पवित्रशास्त्र पूरा करता है कि, "अपने पड़ोसी से अपने जैसा प्रेम करो;" बुतपरस्ती और ईसाई मूर्तिपूजा का सत्यानाश करता है, — सामाजिक, नागरिक, आपराधिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में जो कुछ भी गलत है; लिंगों को बराबर करता है; मनुष्य पर शाप की घोषणा करता है, और कुछ भी नहीं छोड़ता है जो पाप कर सकता है, पीड़ित हो सकता है, दंडित हो सकता है या नष्ट हो सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वान्नी, न्याय करने, निंदा

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6